NATIONAL SENIOR CERTIFICATE EXAMINATION
NOVEMBER 2020

HINDI FIRST ADDITIONAL LANGUAGE: PAPER II

MARKING GUIDELINES

Time: 2 hours 70 marks

These marking guidelines are prepared for use by examiners and sub-examiners, all of whom are required to attend a standardisation meeting to ensure that the guidelines are consistently interpreted and applied in the marking of candidates' scripts.

The IEB will not enter into any discussions or correspondence about any marking guidelines. It is acknowledged that there may be different views about some matters of emphasis or detail in the guidelines. It is also recognised that, without the benefit of attendance at a standardisation meeting, there may be different interpretations of the application of the marking guidelines.

IEB Copyright © 2020

भाग क

निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्हीं दो पर पूछे गये प्रश्नों का उत्तर हिन्दी में दीजिए।

प्रश्न एक

कविता

१.१ हिमालय

१.१.१ हिमालय का सन्देश क्या है ?

हिमालय' संसार के किसी पर्वत की जीवनकथा इतनी रहस्यमयी न होगी जितनी हिमालय की है ॐ उसकी हर चोटी हर घटी हमारे धर दर्शन काव्य से ही नहीं हमारे जीवन के सम्पूर्ण निश्रेयम से जुडी हुई है ॐ संसार के कसीस अन्य पर्वत की मानव की संस्कृति काव्य दर्शन धर्म आदि के निर्माण में ऐसा महत्त्व नहीं मिला है जैसा हमारे हिमालय को प्राप्त है ॐ वह मनो भारत की संशिलष्ट विशेषताओं का ऐसा अखंड विग्रह है जिस पर काल कोई खरोच नहीं लगा सका ॐ वस्तुतः हिमालय भारतीय संस्कृति के हर नए चरण का पुरातन साथी रहा है ॐ भारतीय जीवन उसकी उजली छाया में पलकर सुन्दर हुआ ये उसकी शुभ्र ऊंचाई छूने के लिए उन्नत बना है और उसके हृदय से प्रवाहित नदियों में घुलकर निखरा है ॐ हमारे राष्ट्र के उन्नत शुभ्र मस्तक हिमालय पर जब संघर्ष की नीललोहित आग्नेय घटायें छ गयीं तब देश के चेतनाकेन्द्र ने आसन्न संकट की तीव्रानुभूति देश के कोनेकोने में पहुंचा दी ॐ धरती की आत्मा के शिल्पी होने के कारन साहित्यकारों और चिंतकों पर विशेष दायित्व आ जाना स्वाभाविक ही था ॐ इतिहास ने अनेक बार प्रमाणित किया है कि जो मानव समूह अपनी धरती से जिस सीमा तक तादात्म्य कर सका है वह उसी सीमा तक अपनी धरती पर अपराजेय रहा है ॐ (६)

१.१.२ "युग युग अजेय" कविता में इस का अर्थ क्या है ?

अनादिकाल से हिमालय के स्टैंड अपरिभाषित थे। कोई भी इस पर्वत पर विजय प्राप्त नहीं कर सका है। (४)

१.१.३ निम्नलिखित पंक्तियों को अपने शब्दों में संक्षेप व्याख्या कीजिए।
(क) " सुखसिन्धु , पंचनद , ब्रह्मपुत्र , गंगा , यमुना की अमिय धार "

खुशी का फव्वारा। ब्रह्मपुत्र गंगा और यमुना का स्रोत। वे सारी खुशियां देते हुए जमीन से गुजरते हैं। हिमालय इस सारी समृद्धि का मूल है। (४)

(ख) "कह दे शंकर से, आज करें वे प्रलय नृत्य फिर एक बार।

शंकर से यह कहें कि वह एक बार फिर से प्रणय नृत्य करें। दुनिया को एक साफ स्लेट पर शुरू करने की जरूरत है। (४)

१.२ **माता**

१.२.१ "माता " शीषक कविता के आधार पर नारी हृदय की विशेषताओं का परिचय दीजिय ?

मेरा यह पुत्र मेरा जीवन मेरा सुख धन दौलत है और मेरे यौवन की यादें है। मेरे पुर्व जन्म का बचपन आज मुझे खेल रहा है। मेरे दिल का टुकड़ा मुझे ढ़केल रहा है। इसे देखकर लगता है कि जैसे एक बार फिर से मेरे जीवन का नूतन प्रारंभ हो रहा हो। यह अत्यन्त सजीव प्राणों से युक्त। तेजोमय तथा छोटी सी मस्तनी वस्तु जैसे हम पति पत्नी दोनों की एक सम्मिलित मधुर मूर्ति विधाता ने बना दी हो। मेरा यह नन्हा बच्चा मेरा ही छोटा रूप छोटी प्रतिमा है और मैं अपनी ही इस छोटी प्रतिमा पर अपने आपको निछावर क्यों कर देती हूँ। (८)

१.२.२ *"अरे मुझको कहते है माता "। कविता* इस व्याख्य से क्यों शुरू होती हैं

माता दुखी है। यह विधाता से पूछती है तू मेरे दिल के बारे में क्या जानेगा। मैंने भगवान की मूर्ति को बड़े प्रेम से सजाया उसो भगवान को मैने लाचार होकर सौंप। देया दोंनो नाचते हुए आए। कृष्ण और मेरा लाल। मॉ कतती है मैं पहले अपने बच्चे को गोद में लुंगी जिसे मैंने जन्म दिया है। वह अपने पुत्रसे कहती है कि सारी जिन्दगी उसने सुख का त्याग किया। गरीबी सही और अपने यौवन जीवन में त्याग ही त्याग किया है। (४)

१.२.३ निम्नलिखित पंक्तियों को अपने शब्दों में संक्षेप व्याख्या कीजिए।
(क) मेरा जविन, मेरे चुम्बन की झड़ झेल रहा है।
"गया समय, आता न लौटकर", मैंने झूठा पाया॥

उसका बचपन जब बुढ़ापा की ओर बढ़ रहा हूँ। उसका बुढ़ापा उसके सामने खेल रहा हूँ। उसे इस बात पर विश्वास नहीं है कि बीता समय लौटकर नहीं आता है। उसके बीते हुए दिन अब अब भविष्य में बच्चा बनकर गोद खेलने आया है। मॉ कहती है कि बुढ़ापे में व्यक्ति एक बच्चा जैसे हो जाता है। जिसे दूसरे लोग देखभाल करता है।अपने बुढ़ापे के समय वह जवानी बढ़ रहीं थी। (५)

(३५)

प्रश्न दो

निम्नलिखित दो प्रश्नों में से किन्हीं एक के पूछे गये प्रश्नों का उत्तर हिन्दी में दीजिए

२.१ कहानी ः प्रतिज्ञा - निम्नलिखित कथन का अध्ययन करें और कहानी के आधार पर एक स्पष्ट व्याख्या लिखें टिपपणी कीजिए ः

'प्रतिज्ञा' उपन्यास विषम परिस्थितियों में घुट घुट कर जी रही भारतीय नारी की विवशताओं और नियति का सजीव चित्रण है। प्रतिज्ञा का नायक विधुर अमृतराय किसी विधवा से शादी करना चाहता है ताकि किसी नवयौवना का जीवन नष्ट न हो। ..। नायिका पूर्णा आश्रयहीन विधवा है। समाज के भूखे भेड़िये उसके संचय को तोड़ना चाहते हैं। उपन्यास में प्रेमचंद ने विधवा समस्या को नए रूप में प्रस्तुत किया है एवं विकल्प भी सुझाया है। इसी पुस्तक में प्रेमचंद की अंतिम और अपूर्ण उपन्यास मंगलसूत्र भी है। इसका बहुत थोड़ा अंश ही वे लिख पाए थे। यह गोदान के तुरंत बाद की कृति है जिसमें लेखक अपनी शक्तियों के चरमोत्कर्ष पर था।

बनारस में अमृतराय नामक सज्जन रहते हैं। वे पेशे से वकील हैं पर उन्हें वकालत से ज्यादा समाज - सेवा ही पसंद है, दाननाद उन्के मित्र हैं। अमृतराय का विवाह शहर के जाने माने रईस लाला बदरी प्रसाद की प्रथम पुत्री से होता है पर प्रसव - काल में ही उसकी और बच्चे की भी मौत हो जाती है। अमृतराय दो साल देशाटन करके वापस लौटते हैं और तब तक लालाजी की दूसरी कन्या प्रेमा सयानी हो चुकी होती है। प्रेमा के परिचय से अमृतराय अपनी वेदना भूल जाते है और दोनों का परस्पर प्रेम होता है। लालाजी तो प्रेमा का विवह अमृतराय के दोस्त दाननाद से करना चाहते थे, पर अमृतराय से प्रमा का लगाव देखकर अपना निर्णय बद्ल्ते हैं। अमृतराय और प्रेमा का विवह होनेवाला ही है, पर एक घटना से सब कुछ बदल जाता है।

अमृतराय आर्य - मंदिर में एक व्याख्यान सुनकर प्रतिज्ञा करते हैं कि वे एक विधवा से ही शादी करेंगे। इस प्रतिज्ञा से लालाजी नाराज हो जाते है कि यह संप्रदाय के खिलाफ है। पर प्रेमा उसके निर्ण्य का स्वगत करती है और उस से अपना प्रेम त्याग देति है। अब दाननाद से फिर प्रेमा का विवाह तय होता है, दाननाद तो संकोच करते हैं कि मित्र से प्रेम करनेवाली युवती इस विवाह के लिए तयार नहीं होगी। पर अमृतराय के कारण दाननाद विवाह के लिए 'हॉ' कहते हैं। दाननाद और प्रेमा का विवाह हो जाता है।

लाला बदरीप्रसाद के पडोस वसन्तकुमार प्रवाह के बीच में जाकर डूब जाते हैं इसलिए पूर्णा विदवा बन जाती है। उसका अपना कोई नहीं है। अत: लालाजी अपने घर में उसे आश्रय देखर उसकी रक्षा करते हैं। लालाजी का पुत्र कमलाप्रसाद दुराचारी और लम्पट है। पूर्णा के सौंदर्य से वह चकित हो जात है और गलतनीति अपनाकर उसे पाने का प्रयास करते रहता है। वह जाल बिछाकर पूरणा को फॅसाना चाहता है और कई झूठी बातें कहकर उसका मन जीतने की कोशिश करता है। सुमित्रा, जो उसकी पत्नी है-पूर्णा को धैर्य देती है और अन्याय के खिलाफ लडने की प्रेरणा देती है। दाननाद प्रेमा को पाकर संतुषट नहीं शंकालु बन जाते हैं। उन्हें शक है कि प्रेमा अभी अमृतराय के प्रेम से बाहर नहीं आयी। वे कमलाप्रसाद की दोस्ती से अमृतराय के खिलाफ जाने लगते हैं और उनकी निन्दा भी करने लगते हैं। अमृतराय अपनी जमीन -जायदाद बेचकर ' वनीता-भवन' का निर्माण करते हैं जो विदधवाओं और अनाथ बालिकाओं का शरणालय है, उसके संचालन के लिए अमृतराय चन्दा वसुल करना चाहते हैं तो कमलाप्रसाद और दाननाध इसकी भी आलोचना करते हैं। एक कार्यक्रम में कमलाप्रसाद के भेजे गये गुणडे लोग अमृतराय पर आक्रमण करते है। पर प्रेमा बीच में आकर उन्हें रोकती है। उसके भाषण से चन्दा - वसूली कार्यक्रम सफल हो जाता है। पर इससे दाननाद और प्रेमा के बीच दूरियॉ बढ जाती है।

एक दिन बहान बनाकर कमलाप्रसाद पूर्णा को शहर से दूर अपने बगीचे में ले चलता हैं। वहां पूर्णा पर बलात्कार करने की कोशिश करता है, तो पूर्णा उस्के चेहरे पर कुर्सी दे-मारकर भाग जाती है, कमलाप्रसाद बुरीतरह चोट खाकर गिर पड़ता है। पूर्णा भागकर अमृतराय की शरण में जाती है और वनिता भवन में आश्रय पाती है। पूर्णा के कारण कमलाप्रसाद की जगहंसाई होती है और वह पूरी तरह बदल जाता है। इधर दाननाद भी अपने किए पर पछतात है कि कमलाप्रसाद जैसे दुषट की बातों में आकर वे अमृतराय का विरोध करते आये। वे अमृतराय से क्षमा मांगते हैं और अमृतराय तो सह्रदय हैं, वे भी मित्रता का हाथ आगे बढ़ाते हैं। दोनों मित्रों के पुनर्मिलन से प्रेमा बहुत खुश होती है और दाननाध को पूरे दिल के साथ अपनाती है।

वनिता-भवन में जाकर पूर्णा मानसिक शान्ति का अनुभव करती है। वह भवन विधवाओं का आश्रम ही नहीं, उनका प्रशिक्षणाय भी है, वहं विधवाओं की बनी चीजों की बिक्री होती है और इससे उन्हें स्वावलम्बन का अनुभव भी होता है। जब दाननाद अपने मित्र को प्रतिज्ञा की याद दिलाते हैं तब अमृतराय वनिता भवन की ओर दिखाकर सूचना देते है कि अब उसका निर्वाह करने में ही प्रतिज्ञा पूरी होगी। दाननाद जानते है कि अब अमृतराय आजीवन अविवाहित रहकर समाज सेवा करेगें।

इस उपन्यास में प्रेमचन्द ने नन्कलीन भारतीय समाज में व्याप्त विध्वा-समस्या का चित्रण किया। पूर्णा पात्र के द्वारा समाज में तिरस्कृत और पीड़ित विधवाओं की मजबूरियों का मरमस्पर्शी चित्रण किया गया। सुमित्रा और प्रेमा के पात्र आदर्श नारी - पात्र हैं तो कमलाप्रसाद अबलाओं पर अत्याचार करनेवाले दुष्टों का प्रतिनिधि है। प्रेमचन्द ने विध्वा-समस्या का समाधान अर्थिक स्ववलम्बन में दिखाया, जो आचरणात्मक है। प्रेमचन्द ने अपने जीवन में स्व्यं एक बाल - विधवा से विवाह करके समाग के सामने आदर्श प्रस्तुत किया। प्रस्तुत उपन्यास की भाषा सरल और व्यावहारिक है। कहावतों और मुहावरों के प्रयोग से उपन्यास सजीव बन पड़ा। हर दृष्टि से यह उपन्यास प्रेमचन्द की उत्तम कृतियों में से एक है। (३५)

अथवा

२.२ २.२.१ देश में क्या हुआ अपने शब्दों में वर्णन कीजिए ?

देश में घोर अकाल पढ़ा था। साल भर से पानी की बूँद भी नहीं पड़ी थी। खेतों में धूल उड़ती थी। घास तक जल गयी थी। न कहीं अन्न था और न जल। लोग वृक्षों की छालों कूट कूट कर खाते थे। समस्त देश में हा हाकार मचा हुआ था (५)

२.२.२ एक दिन हिन्दू प्रजा क्या किया ?

एक दिन लाखों हिन्दू प्रजा एकत्र होकर देश के बड़े महात्मा बाबा दुर्लभदास की सेवा में पहुँची और उनके द्वार पर गले पड़ जाने वालोम् की तरह जा बैठी। (४)

२.२.३ राजा पृथ्वीपाल सिंह का चरित्र पर प्रकाश डालिए?

राजा पृथ्वीपाल सिंह एक दुश्चरित्र मनुष्य थे। अपने भोग विलास के सिवा और कोई काम न था। महीनों रनिवास से बाहर न निकलते। नृत्य गान और आमोद प्रमोद की सदा अधिकता रहा करती थी । सारे देश के भॉड़ भड़वे लुच्चे और लफंगे उनके सहवासी थे। नित्य कई तरह की शराबें मँगाई जाती थी। (६)

२.२.४ प्रजा मैदान में क्या किया ?

मैदान में जमा हो गए और जान पर खेलकर उच्च स्वर से दुहाई मचाने लगे। द्वारपालों तथा सैनिकों ने उन्हें वहों से बलात् हटाना चाहा डॉटा मारने की धमकी दी। पर इस समय लोग प्राण समर्पन करने पर उदयत थे। (४)

२.२.५ प्रजा राजा से क्या कहा ?

दनिानाथ साल भर से एक बूँम्द जल नहीं बरसा। सारे देश में हाहाकार मचा हुआ है। तालाबों में पानी नहीं है कुएँ सूख गए हैं। यहॉ तक कि नदियों की धाराएँ बन्द हो गई हैं। आप हमारे स्वामी हैं आप ही की कृपादृष्टि होने पर हमारा कल्यण हो स्कता है। (४)

२.२.६ राजा ने अनुकम्पित होकर क्या कहा ?

"सज्जनों मुझे ऐसी आशा नहीं है। आपके ऊपर विपत्ति पड़ीहुई है. इसका मुझे अत्यन्त दुख है। किन्तु मैं तुम लोगों को निराश नहीं करना चाहता।" (४)

IEB Copyright © 2020

२.२.७ प्रतिज्ञा क्या थी ?

मध्याह्न-काल था। सूर्य की प्रखर किरणें अग्नि के शरों के समान पृथ्वी पर गिर रही थीं और पृथ्वी पीड़ा तथा भय से काँप रही थी। झुलसती हुई रेती से भाप निकल रही थी, मानो यह अनाथ पृथ्वी की आह का धुआँ था। ऐसे समय में राजा पृथ्वीपाल सिंह राजभवन से बाहर निकले। उनके शरीर पर एक पतली लँगोटी के सिवा और कोई वस्त्र या आभूषण न था। सुन्दर केश मुड़े हुए थे और मुख पर कालिमा पुती हुई थी। उस कालिमा में उनके रक्त-वर्ण नेत्र इस प्रकार चमक रहे थे, मानो काली बनात पर लाल रेशम के फूल बने हों। उनका चेहरा उदास और मलिन था और आँखों में आँसू बह रहे थे। इस भाँति नंगे सिर, नंगे पैर, ग्लानि, नैराश्य तथा लज्जा की मूर्ति बने हुए वे आकर राजभवन के सामने, जलती हुई भूमि पर खड़े हो गए। मन्त्रियों तथा अन्य अधिकारियों ने राजा को रोकने की बहुत चेष्टा की, पर उन्होंने कुछ दृढ़ प्रतिज्ञा की थी। वे उससे विचलित न हुए।

नगर-निवासियों ने यह वृत्तान्त सुना। वे दौड़ते हुए उस स्थान पर आकर जमा हो गए। ऐसा कोई हृदय न था जो राजा की ऐसी नैराश्यपूर्ण दृढ़ता पर द्रवित न हो गया हो। लोगों ने बहुत दीनता से कहा, "स्वामी, आप इस कालिमा को धो डालिए, इससे हमारे हृदयों पर चोट लगती है।" राजा ने सुदृढ़ भाव से उत्तर दिया, "भाइयो, यह कालिमा अब ईश्वर की कृपा और दया के जल से धुलेगी, अन्यथा नहीं।"

एक घण्टा बीत गया। राजा का मुख-मण्डल काले तवे के सदृश्य तप रहा था। उनकी आँखों से अग्नि की चिनगारियाँ निकलने लगीं। चोटी का पसीना एड़ी तक जा रहा था। उनका पद-स्थल भीग गया। मस्तक गर्म पानी के सदृश खौल रहा था। प्रतिक्षण लोगों को भय होता था कि कहीं वे मूर्च्छित होकर न गिर पड़ें। लोग अत्यन्त विनीत भाव से कह रहे थे, "दीनबन्धु, आप अपने सुकोमल शरीर को अब कष्ट न दें। हमें अन्न-जल के बिना मर जाना स्वीकार है, पर आपकी यह दशा देखी नहीं जाती।" किन्तु राजा के मुख-मण्डल से अटल प्रतिज्ञा का दिव्य प्रकाश फैल रहा था। उनकी कर्म तथा ज्ञान की समस्त इन्द्रियाँ शून्यावस्था में थीं। हाँ, शरीर का एक-एक रोम स्पष्ट शब्दों में कह रहा था कि—"परम पिता, मेरी प्रजा दुखी है, उसे उबारिए। मैं पापी हूँ, कुकर्मी हूँ, दुराचारी हूँ, दुर्व्यसनी हूँ, मुझे आपसे कुछ प्रार्थना करने में भी लज्जा होती है, पर मेरे कुकर्मों का दण्ड मुझे मिलना चाहिए; मेरी प्रजा निरपराध है, उस पर दया कीजिए। मैं कठोर-से-कठोर यातना के लिए आपके सम्मुख सिर झुकाये खड़ा हूँ। यदि आप मेरी प्रार्थना को स्वीकार न करेंगे तो मैं यहीं खड़े-खड़े प्राण दे दूँगा, पर प्रजा को अपना मुँह न दिखाऊँगा। मैं आपका दासानुदास हूँ, आपसे अपना दुःख कहने में कोई अपमान नहीं है; किन्तु जो प्रजा मुझे अपना स्वामी समझती है उसके सामने मैं कौन मुँह लेकर जाऊँ ?"

दो घण्टे बीत गये। सूर्य की किरणें और भी प्रचण्ड हुईं। भूमि और भी अधिक तप्त हो गई। सारी प्रजा आकाश की ओर टकटकी लगाए देख रही थी, किन्तु बादल का कहीं नाम न था।

(८)
(३५)

प्रश्न ३

निम्नलिखित दो प्रश्नों में से किन्हीं एक के पूछे गये प्रश्नों का उत्तर हिन्दी में दीजिए।

३.१ कहानी : पॉच मिनट

३.१.१ पॉच मिनट क्यों मिला ?

बस, पाँच मिनट ! वह सीखचों के उस पार हथकड़ियों से जकड़ा हुआ और मैं—हाय भाग्य !—मैं पुलिस के पहरे में बाहर खड़ी, काँपती हुई, थर-थराती हूँ। बस, पाँच मिनट की मलाक़ात थी—देखते-देखते समाप्त हो गयी ! (४)

३.१.२ "वे छुरी बनकर मेरे हृदय में चुभ जाती हैं "संक्षेप में चर्चा कीजिए ?

पिछली बातों की याद क्यों करूँ ? वे छुरी बनकर मेरे हृदय में चुभ जाती हैं। पिछली गाथा किसे सुनाऊँ ! कोई मन लगाकर सुननेवाला नहीं; यदि कोई सुनता है भी तो अनमना होकर, बेमन से। सुनकर कहता है—"बहिन, तुम्हारा भाग्य ! ईश्वर को याद करो।" हाय ! दुर्भाग्यग्रस्त अभागों को कभी ईश्वर ने सहायता नहीं पहुँचायी, डूबते हुए को ईश्वर ने कभी सहारा नहीं दिया, भूखों को कभी ईश्वर ने रोटी नहीं दी, रोनेवालों के आँसू पोंछने वह कभी नहीं आया। (८)

३.१.३ कहानी में गरीबी के बारे में कहा गया ?

एक बार दुर्भाग्य को पुकारा तो एक बेकरा, ग़रीब ग्रैजुएट से गठबंधन कराके वह बगलें बजाने लगा, दूसरी बार

यदि गरीबी ही समस्त अपराधों की जड़ है तो दे दो उसे फाँसी, उसे गोली से उड़ा दो, कुत्तों से नुचवा डालो। पर मैं कहूँगी—वह खूनी नहीं, दरिद्र है; अपराधी नहीं, भूखा है; हत्यारा नहीं, विपदग्रस्त है। उसे पापी मत कहो, भूखा कहो। (६)

३.१.४ सरकारी पत्र में क्या सन्देश मिला ?

कल मुझे एक पत्र मिला—सरकारी। मेरा पति मुझसे मुलाक़ात करना चाहता है—अन्तिम मुलाक़ात। वह परसों फाँसी पा जाएगा। उसकी अन्तिम इच्छा है—अपने बच्चों को देखेगा, स्त्री को देखेगा। मैं अपने पति के अन्तिम दर्शन करने (४)

३.१.५ गोपाल अम्मा से क्या बोला ?

गोपाल प्रसन्न होकर बोला—अम्मा, बहुत दिनों से बाबूजी नहीं आये। खिलौने माँगूँगा; पैसे माँगूँगा। मुन्नी को एक भी खिलौना नहीं दूँगा। मेरे बाबूजी हैं; वे मुन्नी के कौन होते हैं?" मेरा हृदय शतधा विभक्त हो गया। हाय रे अभागा बच्चा! तेरे बाबूजी काल की गोद में बैठे हैं, जीवन के दिन उँगलियों पर गिन रहे हैं। पिंजड़े में बंद हैं। साहस करके बोली—बेटा, भगवान् की याद करो।

गोपाल मेरा अंचल खींचकर बोला—बाबूजी कब आवेंगे? साथ लेकर आऊँगा! तुम मना मत करना; वे मेरे लिए छोटी- (६)

३.१.६ अंतिम दृश्य को अपने शब्दों में वर्णन कीजिए।

तुम पढ़ना। अम्मा को कष्ट न देना।" मैंने देखा कि उसकी आंखों से आँसुओं की धारा बह रही थी। वह छड़ पकड़कर खड़ा है—पत्थर की तरह। गोपाल ने फिर कहा—"बाबूजी, मुन्नी रोती है। उसने मेरी स्लेट तोड़ दी। दूसरी स्लेट खरीद दो।"

उसने एक लंबी साँस छोड़कर कहा—"सुनती हो, गोपाल की स्लेट टूट बयी है। इसे एक स्लेट ख़रीद दो।"

मैं क्या बोलती, मुझे तो ऐसा ही जान पड़ा कि मानों मेरे दोनों कान बहरे हो गये। आँखों के आगे अन्धेरा छा गया।

उसने फिर कहा—"अच्छी तरह रहना; बच्चों को प्यार से रखना और गोपाल को पढ़ाती रहना। मैं तो अब चला; पर गोपाल को अपनी थाती रखे जाता हूँ। चिन्ता मत करो। जो होना था, होकर ही रहा।"

मैं बोली—"और...और..."

कण्ठ रुँध गया—आँखों से मानों कलेजे का खून आँसू बनकर गिरने लगा।

सिपाही बोला—"बस, चलो पाँच मिनट हो गये!" वह बोला—"अच्छा, बिदा! एक बार मेरी ओर से गोपाल को चूम लो—मैं देख लूं। परमात्मा तुम्हें धैर्य दे। अगले जन्म में मिलूँगा।"

सिपाही गुर्राकर बोला—"जल्दी करो, समय समाप्त हो गया; चलो।" (७)

(३५)

अथवा

३.२ **कहानी ः** पॉच मिनट ः

"बस,पॉच मिनट ! वह सीखचों के उस पार हथकड़ियों से जकड़ा हुआ और मैं हाय भाग्य ।"कहानी के आधार पर इस पंक्तियों पर चर्चा कीजिए । विस्तार पूवर्क समझाइए ?

कहानी पत्नी द्वारा प्राप्त पत्र पर केंद्रित है। उनकी अंतिम इच्छा केवल यह कि वह उनसे मिलने से पहले उनसे मुलाकात करें। वह कहती है कि भगवान भगवान केवल अमीरों के लिए है। उसे गरीबों की परवाह क्यों करनी चाहिए। चाहिए।

मैं दुर्भाग्य का अंतिम प्रतीक हूं। उसने क्या किया? हाँ, वह एक बदमाश था: लड़ाई लड़ी और उसने सभी नकारात्मक चीजें कीं। लेकिन यह खुद को और उनके परिवार को खिलाने के लिए किया गया था। उसके पास और क्या विकल्प था।

पत्नी का कहना है कि उसे सरकार से एक पत्र मिला है जिसमें कहा गया है कि कि उसका पति उससे मिलना चाहता है। कैसे अपने प्रियजन से मिलना संभव संभव है, जब आप जानते हैं कि वह नहीं रह जाएगा।

मैं गया था । मैं कम से कम एक बार उनके पैर छूना चाहता था। यह आपका बच्चा है। कम से कम उसे कुछ पितृ प्रेम का अनुभव करने दें।

जेल में। वार्डर ने कहा कि आपके पास पांच मिनट हैं। आप उसे कुछ भी देने की अनुमति नहीं हैं।

उन्होंने एक गहरी साँस ली। कृपया गोपाल का ध्यान रखें। अलविदा कहानी गरीबी के दर्द के इर्द-गिर्द घूमती है। कैसे गरीबी के कारण, कोई आपराधिक गतिविधि में शामिल हो जाता है। अंत में

में आपको अपने प्रियजन के साथ बिताने के लिए सिर्फ पांच मिनट मिनट मिलते हैं। यह कैसा न्याय है। किसे दोष देना है

कहानी गरीबी की कठिनाई और दुख पर चर्चा करती है। कैसे भी बच्चों को एक पिता के प्यार से लूटा जाता है। कुछ मिनट जीवन भर की कठिनाई का प्रतीक बन जाते हैं

(३५)

प्रश्न चार

निम्नलिखित नाटक मेल मिलाप में से किन्हीं एक के पूछे गये प्रश्नों का उत्तर हिन्दी में दीजिए

४.१ एकांकी " मैं और केवल मैं " शीर्षक पर चर्चा कीजिए ।

एकांकी का मूल भाव यही है कि जहाँ सब लोग केवल "मैं" का विचार करते हैं, वहाँ कभी अच्छा परिणाम नहीं आता। यहाँ भी रामेश्वर और खन्ना की मृत्यु हो जाती है। एकांकी में आदर्श और यथार्थ के बीच संघर्ष होता है। रामेश्वर एक आदर्शवादी और नेक आदमी है। घर में पत्नी बीमार होते पर भी वह दफ्तर आता है और अपनी जबाबदारी निभाता है। वह सब का भला चाहता है। वह किसी का बुरा नहीं देख सकता है। लेकिन खन्ना बेईमान इन्सान है। (४)

४.२ 'मैं और केवल मैं " के आधार पर निम्नलिखित पात्रों का चरित्र चित्रण कीजिए ?

(क) खन्ना

खन्ना।
'मैं और केवल मैं" एकांकी में खन्ना का चरित्र ना आदर्शवादी और ना नेक पुरुष का है, बल्कि एक बेईमान स्वार्थी आदमी का।

अंग्रेजी, टॉमसन का दफ्तर में अनेक भारतीय काम करते हैं। इन में से कुछ प्रमुख है, और खन्ना इसी भाग में से एक है। दफ्तर में वह कुछ काम नहीं करता। टॉमसन की चापलूसी करने से उसका प्रिय पात्र बन गया है। उसके विरुद्ध यदि कोई शिकायत करे, तो वह अफसर से कहकर उसे निकलवा देता है।

खन्ना अपने साथियों पर बहुत रोब (overbearing influence) जमाता है वह टॉमसन को अपना वश में कर रखा है। वह उस से जो चाहता है, करवा लेता है। इस से सारा दफ्तर उस से डरता है। इसी कारण भी दफ्तर में उसका कोई मित्र नहीं है। साथ काम करने वाले उस से बदला लेने की ताक में रहते है। जब उन्हे मालूम होते हैं कि टॉमसन खन्ना से नाराज़ है, तो वे रामेश्वर को खन्ना की शिकायत करने भेजना चाहते है। लेकिन आदर्शवादी रामेश्वर स्पष्ट इनकार कर देता है और कहता है कि मैं किसी पर चोट या नुकसान नहीं पहुँचा सकता।

अपने स्वार्थ के लिए खन्ना परमानन्द को नौकरी से निकलवा देता है। उसे कोई चिन्ता नहीं है कि परमानन्द के परिवार के लोग भूखें मरेंगे। इस में एक बूढ़ी माँ भी है। इसी कारण दफ्तर में काम करने वाला, कृष्णचन्द्र उस के संबन्ध बहुत खराब भावना रखता है। वह कहता है कि यदि नौकरी पर निर्भर न होते तो वह खन्ना को इतने लंबे समय तक टिकने नहीं देता। लाचार होने के कारण वह कुछ भी नहीं कर सकता।

खन्ना में एक भी अच्छा गुण नहीं है। जब रामेश्वर उनको परमानन्द को निकलवाने के बारें में सामना करता है, तो वह (८)

(ख) कृष्नचन्द्र

कृष्णचन्द्र

"मैं और केवल मैं" एकांकी में कृष्णचन्द्र एक ऐसा पात्र है, जो हमेशा अपने स्वार्थ का विचार करता है। अंग्रेजी, टॉमसन के दफ्तर में रामेश्वर और खन्ना के साथ काम करते हैं। वह खन्ना का विरोधी (against) है। रामेश्वर के मदद से वह खन्ना को नौकरी से निकलवाना चाहता है। लेकिन आदर्शवादी रामेश्वर उसकी बातों में नहीं आता। इसी कारण वह रामेश्वर से नाराज़ है और उसकी किसी बातों पर ध्यान नहीं देता।
हरेक बात में वह केवल अपने स्वार्थ का विचार करता है। दफ्तर में आते ही वह काम करने के बदले रामेश्वर के पास बैठ जाता है। रामेश्वर अपनी बीमार पत्नी की बात करता है। कृष्णचन्द्र का बहनोई बड़ा डाक्टर है। रामेश्वर अपनी पत्नी को उसे दिखाने की बात करता है। लेकिन कृष्णचन्द्र उसकी एक भी बात पर ध्यान नहीं देता, केवल खन्ना के विरुद्ध शिकायत करता रहता है। वह चाहता है कि रामेश्वर टॉमसन से कहकर खन्ना को अलग करा दे।

कृष्णचन्द्र दूसरों का नाश करने में भी संकोच नहीं करता। वह रामेश्वर से कहता है कि आज टॉमसन खन्ना से नाराज़ है, अच्छा मौका है। टॉमसन तुम्हे बहुत मानते हैं, इसीलिए तुम उसे अलग कर देने को कह दो। रामेश्वर स्पष्ट कह देता है कि मैं ऐसा किसी पर, कभी नहीं करूँगा।
वह केवल "मैं" का ही विचार करता है। रामेश्वर से अपना काम करवाना चाहता है, लेकिन उसे कोई मदद देने को तैयार नहीं है। रामेश्वर उसके बहनोई डाक्टर से मिलना चाहता है, पर कृष्णचन्द्र उसकी बात पर ध्यान नहीं देता। देवनारायण भी उसे यही समझाता है कि दुनिया में कोई किसी का सहायता नहीं करता। सब केवल अपने स्वार्थ का ही विचार करते हैं। (८)

४.३ टॉमसन कौन है ?

अंग्रेज़ी टॉमसन। दफ्तर में वह अफसर है। कार्यालय में उनका पसंदीदा था। (४)
वह उनसे अन्य श्रमिकों की जासूसी करने की अपेक्षा करता था।

४.४ किसके कर्तव्य की भावना सब से ऊँची होती हैं ? अपने शब्दों मे समझाइए।

उसके लिए कर्तव्यकी भावना सब से ऊँची होती है। जब धमकी देकर खन्ना उसे नौकरी से निकालना चाहते हैं, अफसर टॉमसन उसे समझाने की कोशिश करता है। पक्षपात के कारण टॉमसन ने रामेश्वर को गैर जिम्मेदार (irresponsible) कह देता है। टॉमसन कहता है कि कर्तव्य का स्थान भावना से ऊँचा है। रामेश्वर जबाब देता है कि कर्तव्य ही सब से

ऊँची भावना है। मैं आज तक अपना कर्तव्य निभाता आया हूँ और आगे भी हमेशा अपना कर्तव्य निभाता रहूँगा। अन्त में चारों ओर से दुःख से घिरा हुआ रामेश्वर सब कुछ भूल जाता है। बीबी और बच्चे की मृत्यु से वह निराश हो जाता है। खन्ना के कारण टॉमसन उसे नौकरी से निकाल देते हैं। निस्सहाय (helpless) होकर वह खन्ना का गला दबा देता है। फिर वह स्वयं भी दम तोड़ देता है। (६)

४.५ देवनारायण का पात्र पर प्रकाश डालिए ?

नक्काकी में देवनारायण दुनिया की सच्चाई अच्छी तरह जानता है। वह कहता है कि दुनियावालों को तुम्हारे कृष्णचन्द्र सिर्फ "मैं" का ही विचार करता है। वह एक यथार्थवादी इन्सान है। इस नक्काकी में सिर्फ रामेश्वर एक कर्तव्यपरायण और आदर्शवादी व्यक्ति है। दूसरे सब स्वार्थी हैं। अन्त में आदर्श की हार होती है और यथार्थ की जीत होती है।

(५)
(३५)

अथवा

४.६ इस एकांकी में आपने रामेश्वर और खन्ना के चरित्र दवारा वर्माजी ने यह दिखाने का प्रयत्न किया है कि वस्तुवाद और आदर्शवाद दो पृथक वस्तुएँ हैं । चर्चा कीजिए ?

अंग्रेजी टॉमसन के दफ्तर में अनेक भारतीय काम करते हैं। एक है मिस्टर खन्ना, जो चापलूसी करके उसका प्रियपात्र बन गया है। उसके साथियों उस से बढ़ना लेने की ताक में रहते है। उसी दफ्तर में एक अन्य कर्मचारी रामेश्वर है। घर में दूध-पीता बच्चा और बहुत बीमार पत्नी है। इसी कारण वह उदास बैठा है। इतने में साथी कृष्णचन्द्र आकर खन्ना की शिकायत करने लगता है। कहता है, कि खन्ना को निकलवा के न छोड़ा तो मेरा नाम कृष्णचन्द्र नहीं। रामेश्वर अपने ही विचारों में खोया है, इसलिए ध्यान नहीं देता। तब बेनीशंकर आकर रामेश्वर से उदास होने का कारण पूछता है। वह अपने बीमार बीवी और बच्चे के बारे में बताता है। कृष्णचन्द्र से कहता है कि तुम्हारे बद्नोई नगर के मशहूर डॉक्टर है - मैं उन्हें दिखाना चाहता हूँ। कृष्णचन्द्र कोई ध्यान नहीं देता है। इसी समय केवनारायण आजाता है। उसके पूछने पर रामेश्वर भी उसे अपने दुख की बात कहता है। एक-एक करके सब रामेश्वर के दुख की बातें सुनते है, पर किसी भी उस पर ध्यान नहीं देता है। तब कृष्णचन्द्र रामेश्वर से कहता है

कि यदि वह (रामेश्वर) टॉमसन साहब से कहे तो वे खन्ना को जरूर निकाल देंगे। रामेश्वर स्पष्ट कह देता है कि मैं किसी का अनिष्ट नहीं करूँगा। वे नाराज़ हो कर चले जाते हैं। तब देवनारायण आकर, रामेश्वर को कुछ दिनों की छुट्टी लेकर आराम करने को कहता है। चपरासी महँगू आकर रामेश्वर को हमदर्दी (sympathy) दिखाती है। देवनारायण समाचार देता है कि खन्ना के कहने से टॉमसन ने परमानंद को डिसमिस कर दिया। यह सुनकर रामेश्वर पागल जैसे बन जाता है। उसी समय खबर आता है कि रामेश्वर का बेटा, मोहन, दो मंज़िल से गिर कर मर गया और इस घटना के कारण पत्नी भी मर गई। रामेश्वर को लगता है कि उसके लिए अब सब समाप्त हो गये। उसी समय वहाँ टॉमसन और खन्ना आते हैं। रामेश्वर उन्हे परमानन्द को डिसमिस करने पर बुरा-भला कहता है। खन्ना टॉमसन से इसे भी डिसमिस करने को कहता है। टॉमसन रामेश्वर को समझाता है (३५)

[७०]

Total: 70 marks

IEB Copyright © 2020